

SHRI PURNO AGITOK SANGMA (POSTHUMOUS)

Shri Purno Agitok Sangma was born to Late Shri Dipchon Ch. Marak and Late Smt. Chimri Agitok Sangma on September 01, 1947 at Chapahati Village bordering Bangladesh in South West Garo Hills District, Meghalaya. His early education was in a school in Chapahati Village, however due to the death of his father and difficult conditions at home, he had to discontinue his studies. It was due to the kind intervention of Rev. Father Batista Bussolin who on his tour to the village took Shri Sangma under his wings and brought him to Tura. Shri Sangma was able to finish his High School from Dalu High School in a border town in West Garo Hills under the mentorship of Rev. Father Mathew Elanjipuram. Shri Sangma then went on to complete his B. A. (Honours) Political Science from St. Anthony's College in Shillong shortly after which he earned his Masters in Political Science and LLB at the same time from Dibrugarh University.

2. Shri Sangma tied the nuptial knot with Smt. Soradini Kongkal Sangma, daughter of Late Ajonsing Ch. Marak and Late Subijan K Sangma in the year 1973. They were blessed with two sons and three daughters. After marriage, he started his practice as a lawyer in Turaand at the same time took up a teaching job in the Night School giving adult education.

3. Shri Sangma's political journey began with the Indian National Youth Congress in 1972. He was a visionary who foresaw himself playing a significant role in the service of his fellow brethren not just in the State but also to the Nation. He was appointed as General Secretary of the Meghalaya Pradesh Congress Committee of the India National Congress in 1975 after which he immediately undertook the task of organizing the Congress party in the State in an aggressive manner. Shri Sangma contested his first Lok Sabha election in 1977 from the Tura Lok Sabha Constituency and was victorious at the age of 30. He went on to represent the Tura seat as MP in the Lok Sabha for a record 9 terms and was also elected twice as an MLA in the Meghalaya Legislative Assembly. Shri Sangma was inducted into the Union Government in November 1980 by Smt. Indira Gandhi as a Deputy Minister in-charge of Industries. In 1984 he was given the portfolio of Commerce Ministry in the Cabinet headed by Shri Rajiv Gandhi with additional charge of Home Affairs. He took over as Minister of State with independent charge Labour in October 1986 where he introduced the landmark Child Labour (Prohibition and Regulation) Bill which later became an Act. As Coal Minister, Shri Sangma was instrumental in turning Coal India Limited, a giant Public Sector Corporation going through losses having over 7,00,000 employees into a profit making enterprise. Shri Sangma took over as the Chief Minister of Meghalaya in the year 1988 but returned to National Politics in the year 1991 where he was elected to the 10th Lok Sabha. It was during this tenure that Shri Sangma became the first person from Scheduled Tribe community in India to be elevated to the post of Cabinet Minister in the year 1985 when he took over Minister in-charge of Information and Broadcasting. He made history by becoming the first Speaker of the Lok Sabha to be elected unopposed. He attained the heights of popularity and fame during his tenure as the Speaker of the Lok Sabha during the coalition era. The dexterity with which he managed the proceedings through the rise and fall of 3 successive Governments made him a household name. Armed with just his infectious smile and class teacher like handling of any situation diluted with humor, he was able to set a precedent for the office of the Speaker.

4. Shri Sangma founded the National People's Party in the year 2013 and was able to retain the 2-Tura (Lok Sabha) Parliamentary seat to the 16th Lok Sabha.

5. Shri Sangma passed away on March 04, 2016.



श्री पूर्णो ऐजिटॉक संगमा (मरणोपरांत)

श्री पूर्णो एजिटॉक संगमा का जन्म 01 सितंबर 1947 को दक्षिण पश्चिम गारोहिल्स जिले, मेघालय में बंगलादेश की सीमा के निकटस्थ चापाहाटी ग्राम में स्व. श्री दीपचोन च. मराक, तथा स्व. श्रीमती चिमरी आगितोक संगमा के घर में हुआ। आपने अपनी प्रारंभिक शिक्षा चापाहाटी ग्राम में ही एक विद्यालय में प्राप्त की तथा आपके पिता की मृत्यु एवं कठिन घरेलू परिस्थितियों के कारण आपको पढ़ाई छोड़नी पड़ी। आप पर आदरणीय फादर बतिस्ता वूसोलीन की करूणा हुई और आपको अपने आश्रय में ले लिया और आपको तूरा ले आए। आपने आदरणीय फादर मैथ्यू एलंजिपुरम की देखरेख में चलने वाले पश्चिम गारो हिल्स के एक सीमावर्ती कस्बे में स्थित डालू उच्चतर विद्यालय से अपनी उच्चतर माध्यमिक शिक्षा पूर्ण की। इसके पश्चात, आपने शिलांग स्थित सेंट एंथोनीज कॉलेज से बीए (नर्स) राजनीति शास्त्र की शिक्षा पाई और इसके तुरंत बाद आपने डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय से एक ही साथ राजनीति शास्त्र में स्न तकोत्तर तथा एलएलबी की डिग्री प्राप्त की।

2. वर्ष 1973 में आप स्व. अजोनसिंग च. मराक तथा स्व. सुबिजन के. संगमा की सुपुत्री श्रीमती सोरादिनी कोंगकल संगमा के साथ परिणय-सूत्र में बंध गए। आपके घर दो पुत्रों एवं तीन कन्याओं का जन्म हुआ। विवाह के पश्चात आपने तूरांद में एक वकील के तौर पर कार्य करना प्रारंभ किया और इसके साथ ही साथ, प्रौढ़ शिक्षा देने वाले एक रात्रिकालीन विद्यालय में अध्यापन का कार्य भी प्रारंभ किया।

3. आपका राजनैतिक सफर वर्ष 1972 में भारतीय राष्ट्रीय युवा कांग्रेस से प्रारंभ हुआ। आप एक ऐसे दूरद्रष्टा थे जिसने स्वयं को न केवल अपने राज्य अपितु अपने देश के लोगों की सेवा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए देखा। वर्ष 1975 में आप भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मेघालय प्रदेश कांग्रेस समिति के महासचिव के तौर पर नियुक्त हुए तथा इसके बाद तुरंत ही आपने जोर-शोर से राज्य में कांग्रेस पार्टी के संगठन का कार्य प्रारंभ कर दिया। आपने वर्ष 1977 में 30 वर्ष की आयु में तूरा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से अपना पहला चुनाव लड़ा तथा उसमें विजयी हुए। आपने रिकॉर्ड 9 बार लोक सभा में संसद सदस्य के तौर पर तूरा सीट का प्रतिनिधित्व किया और साथ ही आप दो बार मेघालय विधानसभा में विधायक के तौर पर भी निर्वाचित हुए थे। नवंबर 1980 में श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा आपको प्रभारी उद्योग उपमंत्री के तौर पर केन्द्रीय सरकार में शामिल किया गया। वर्ष 1984 में श्री राजीव गांधी की अध्यक्षता वाले मंत्रिमंडल में आपको गृह मंत्रालय के अतिरिक्त कार्यभार सहित वाणिज्य मंत्री का कार्यभार प्रदान किया गया। वर्ष 1986 में आपने श्रम राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) का कार्यभार ग्रहण किया जहां आपने लैंडमार्क बालश्रम (निवारण एवं विनियमन) विधेयक प्रस्तुत किया जो बाद में एक अधिनियम बना। कोयला मंत्री के तौर पर आपने घाटे में चल रहे 7,00,000 कर्मचारियों वाले विशाल कोल इंडिया लिमिटेड को एक लाभ प्रदान करने वाले इंटरप्राइजेस के रूप में बदलने में अहम भूमिका निभाई। आपने 1988 में मेघालय के मुख्य मंत्री के तौर पर कार्यभार संभाला, किंतु 1991 में आप राष्ट्रीय राजनीति में लौट आए जहां 10वीं लोकसभा में आपको निर्वाचित किया गया। वर्ष 1985 में प्रभारी सूचना और प्रसारण मंत्री के तौर पर कार्यभार संभालने पर आप भारत में अनुसूचित जन-जाति से संबंधित ऐसे पहले व्यक्ति बने जिसने केन्द्रीय मंत्री के उच्च पद को पाने का गौरव प्राप्त किया। आपने लोक सभा स्पीकर के तौर पर निर्विरोध रूप से चुने जाने वाले प्रथम व्यक्ति होने का इतिहास रचा। गठबंधन युग के दौरान लोकसभा अध्यक्ष के तौर पर अपने कार्यकाल में आपने अपार लोकप्रियता एवं ख्याति अर्जित की। लगातार तीन सरकारों के बनने और गिरने के दौरान जिस दक्षता से आपने कार्यवाही का संचालन किया उससे आपने काफी नाम कमाया। अपनी मनोहर मुस्कान तथा कक्षा अध्यापक की तरह सभी परिस्थितियों को मुस्कराते हुए संभालने की दक्षता ने लोकसभा स्पीकर के तौर पर एक उदाहरण प्रस्तुत करने में आपकी सहायता की।

4. आपने वर्ष 2013 में नेशनल पीपल्स पार्टी की स्थापना की तथा 16वीं लोकसभा में 2-तूरा (लोकसभा) संसदीय सीट को बनाए रखने में सफलता पाई।

5. 04 मार्च 2016 को आपका देहावसान हो गया।